

जलाशयपतिष्ठा

जलजज्ञ

नानाथशर्मा

स्वा म. को ल. गी कि
अथ स्वा ना दि दा न.
याम. पु. वा. इ. का. अ. ध
म. क. य. ग. मा. व. मू.
न. को. स्वा. म. तु. यु. का
प. क. ५. या. उ. का. प. ३
वा. उ. का. प. २. स्वा. मु. का
प. ३. व. तु. का. प. ३. स्वा
उ. का. प. २. को. न. का. प. १
ग. ग. म. न. का. क. मा. य
प. मा. द. य. क. से. गं. गा
ज. ल. स. से. ल. स्वा. न.
गो. दा. न. १. आ. नि. रा. या
न. व. स्वा. द. दि. रा. गा
को. मा. गी. पू. जा

अथ ने भी म. र. थ. का. प. दि
पा. नि. तु. न. ॥

लखानधनगतय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वदालक
लकयूत्र, शालिवा, याधान, लीरि, इद्र, लीख, शायुद्धारुल
खानधनगतय ॥ ४ ॥ दधमसगतय रचामर्थन, रुत्रधुद
की, रुत्र, मणिक, नूति, यद्वनाग, वदाल, शिखकाठ, क
उठि, रीष्ठा, लीरि, लू, डाहा, लयल, डीयल, रीचवने
शालिवा, याधान, इद्र, लीख, शायुद्धारुलखानधन
कंसपद, धवासथ, लिल, रियति, वरुल, उरु, रुद्र

३ कायलनिधिक्रीत लयमानन जानकी लीसा यने मरुदावस ॥
गतय ॥ ५ ॥ ॥ कायवक्रं जलनदयक दयकनसा दधम
इकागतय मययक नसा ॥ लाहानदयकानि गकयूत्र ॥ ॥
कायवमदग साममान ॥ ॥ यथा कर्मवलस लीमाय ॥
अनिलादुलका सगुणनदाय ॥ ॥ अठयायि ४ धान, दा
वाग ॥ अक ० न, यद्वनासनवाय ॥ स्वस्मिक ॥ ॥ वंशूलिच
लागाय दधम ॥ ॥ यवा मृगादिनमानयाचक ॥ लीख
नहाय ॥ उं द वस्य त्वा सवि ॥ ॥ इद्र नमान ॥ उं यय ४ यथि

श्री॥ धनिनस्नान॥ ॐ मधिका प्राञ्जला॥ धनवत्स्नान॥ ॐ गङ्गासि
 ॥ कलिनस्नान॥ ॐ मधुवातामृगायनं मधुगन्धनि सिन्धुवशासा
 धानं मृगायधमधुनकमनासमी मधुमत्याधिवे ० वज्र ४
 मधुश्रीवस्तुन ४ विनामधुमायावनस्यनिर्मधुमाइं अमु
 मय्य ४। माधोर्गोवा रुवकुन ४॥ साखननस्नान॥ ॐ समया
 मिसमायडा यधीरि ४ समायधयावमन। म ० ववगी ऊ
 गगीरि ४ पृच्छाका ० म मधुगी मधुमगी रि ४ पृच्छाका म॥ ॐ ॥

मे १। धनसार्धलखनहाय॥ ॐ स्नेहिन ०० ॥ १

चन्दनसिंदूर उडाँका स्नानं॥ विधिव्यक्तलगा पूजायाय
 ॥ ॥ यजमानेन स्वार्घ्यायक॥ ॐ अद्यादि॥ यजमानस्य
 पुष्पलीङ्गलागाययादस्तुयन कल ४॥ च्चननिमित्तार्थं
 सूर्यायाधनिम ४॥ ॐ भास्वकात्रममानामिति॥ यूप्यराज
 नं॥ यजमानन॥ ॐ सिद्धिप्रभुक्रियाप्रभृति॥ ॥ वाक्पदान॥
 ॐ अद्यादि॥ ४ रिवसद्रुद्रगयाव अर्घ्याययाय॥ पुवनमः
 स्नान्यासाध्यागपूजा अस्तपूजा॥ कायलेटागसापूजा

मदगसामुमान॥ ॥ॐ गत्वा चामीत्यादि द्वात्रिंशत्॥ कलगाय
 जाविधिथायाय॥ वाक्त्र॥ दियूजा॥ ॥॥ नित्यकृष्टिकर्तृधन
 क॥ ॥ धनयथाकर्मविलसः श्रीरत्नभाय॥ पूजायायविः
 (ग)य॥ ॥ अग्रयक्रीरासयूजा॥ ॐ ह्रीं सः कूर्मसिनायनमः॥ ॐ
 कूर्ममूर्तयेनमः॥ ॥ षष्ठ्युक्तनयूजा॥ ॐ कौस्तुभयायनमः
 ॥ ॐ कौलित्रसस्वाहा॥ ॐ कौलिखायेवषट्॥ ॐ कौकवचायद्
 ॥ ॐ कौनगायत्री॥ ॐ कः अमुयद्॥ क्रीरासः अगर्सः का
 षट्॥

^{३४८}
 यलसी॥ ॐ ह्रीं सः नन्द्यायेनमः॥ ॐ नन्द्यामूर्तये॥ ॐ षष्ठ्युक्तनयू
 जा॥ ॐ नौस्तुभयाय॥ ॐ नौलित्रसः॥ ॐ नौलिखायेवषट्॥ ॐ
 नौकवचायद्॥ ॐ नौनगायत्री॥ ॐ नः अमुयद्॥ वदः॥ ॐ त्वं
 नाग्रवृष्टीत्यादि द्वात्रिंशत्॥ अत्रयासिसीष्टा॥ यति
 ष्ठावक्रिगमसां पुत्रानाविधाद्वयः॥ ॐ सिपुममरुधुस्मग॥ ॥
 नेर्जुत्ययाक्रीरायूजा॥ ॐ ह्रीं सः कूर्मसिनाय॥ ॐ कूर्ममूर्तये
 ॥ ॐ कौस्तुभयायनमः॥ ॐ कौलिखायेवषट्॥ ॐ ह्रीं सः रादाय॥ ॐ

त्रियूर्णमस्तु ॥ ॥ आचार्याय ॥ कनमिष्टुजायाय ॥ कर्मिण्याः
 लासोगसचननस्वस्मिकचायाव ॥ ॐ विष्णुकर्म ॥ ॐ दमास
 ननमः ॥ ॐ २ ॥ धवाकून रुसाय चन्दन सिद्धन यज्ञाय
 योग पुष्य धूपदीप ॥ दक्षिण आरुणिविय ॥ गुणलिंगाय ॥
 ॐ वाँवाँवूँवूँ वाँ विष्णुकर्म ॥ नमः ॥ ३ ॥ मारु ॥ ॐ विष्णुकर्म नम
 मुर्य मृष्टि ॐ सहाव कानक ॥ ८ ॥ कर्मकून रुसाय विष्णु
 कर्मन्त्रभा मृग ॥ अगुगं धादि ॥ निषिक्कं र विसर्जन
 १ ॐ रुद्रयामस ॥ कीरागोवा लवकाय ॥ ॐ गिलिहिरुसाय दामर्ष ॥ ॐ द्विका दिसम वि

याय न्यासयादावमस्तु ॥ वाक्कण कनमि यजमान याद
 स्त्रायनयाय थायसर्वन ॥ द ॥ धासथादावस्तु मि ॥ धनया
 य ॥ वाक्कणान न्यासयाय अर्घ्यागमय जादाववन ॥ ह मि
 भाय ॥ गायत्री मस्तु ॥ ॐ ववृणय विद्मह सवमुरु लिनधी
 महि ननानाग ४ पुवाद्योग ॥ ॥ अर्घ्यागमय लखनरु
 य ॥ ॐ व ४ अस्तु यरु ॥ ॥ धनरुग वलिन योत विय ॥
 ॐ गणनीत्वा ॥ ॐ नमावस्तु भाय ॥ ॐ घृण घृण यावा ॥ ॐ वि

वि ॥ अस्तु कयन सिद्धा ॥ ध्याय कन

१॥ ॐ यं ह्येता विविधं कृत्वा ॥ ॐ विदिव्य कृत्वा ॥ ॐ ॥ पातालदिग्ब्रह्मयः ॥ ॐ ॥
 श्वेतशुक्लशुक्ल ॥ ॐ शुक्लशुक्लशुक्ल ॥ ॐ ॥ ॥ हृदयमलुपीचायनदं
 हृदयनायाय ॥ ॐ वाहृदयायनमः ॥ ॥ कवचमनुपमाय
 वीरानय ॥ ॐ वं कवचायनमः ॥ ॥ हृनाकशिर्याय
 लखनकाय ॥ ॐ वं मल्लवैत्रेयं नमः ॥ ॐ ॥ अथ न नि सदा रं
 यांचाकायाव वलिसनयाव स्तनसच्चयागच्छाय ॥ अर्नक
 यामन ॥ ॥ वाक्मण आनयकाणवन यादस्त्यनयाय ॥
 कायल्लुनिवागय मच्चिद्यानकाय ॥ धर्मचवास अर्थया
 रं वगव लिचिव नमयकनेक्य ॥

२ कर्मसूत्राय ॥

गुयालखनकाय ॥ ॐ वं ४ अमुय रुट ॥ ॐ धनयाय ॥ ॥ धनका
 यल्लस्त्यनयाय ॥ ॐ हंस ४ कर्मसिनोयनमः ॥ ॐ कर्ममूर्तिय २
 ॥ पूजायाय ॥ ॐ काहृदयाय २ ॥ ॐ कौगिनससुदा ॥ ॐ कौगिखा
 येवषट् ॥ ॐ कौकवचाय २ ॥ ॐ कौनगायवोषट् ॥ ॐ क ४ अमु
 यरुट ॥ ॥ धयायवनकृत्वाय चानगिनकीयाय ॥ अगनको
 थाय स्वस्तिकाया का धनाचकावन ॥ पूजायाय ॥ ॐ नन्दाय
 नमः ॥ ॐ नन्दा मूर्त्तिनमः ॥ वरुंगनपूजा ॥ ॐ नाहृदयाय २ ॥

पुष्पलिमिवर्ति ॥ अर्जुनधर्म ॥ १

ॐ नमो गिरिसम्पदा ॥ ॐ नमो गिरिवायेवषडा ॥ ॐ नमो कवचाय ॥ ॐ नमो नशा
 यत्रोष ॥ ॐ नमः ॥ अमुकय रुट ॥ वदनेयुता ॥ ॐ नमो रिभ चित्ति किन्नरनया
 यभय विनिर्गमन ॥ आनन्दन न्यावा ॥ ॐ मरुग ॥ मोराय यत्र स ॥
 ॐ धारायाय शीर्षाभिः सि विनिर्गमन ॥ आय निष्ठिग ॥ ॐ नमो सिधन उता मका
 स्वानन ॥ वाक् ॥ ॐ नमो यतामानन कनमिन ॥ अग याधिस्य गय ति
 वरुन ॥ वाक् ॥ ॐ नमो चनदिनीयुसा ॥ त्वामगस्कययाद्यद ॥ अ
 गतीनिष्ठ सद्ग ॥ यावच्चलार्क गावक ॥ ॐ अय ॥ ॐ कामप्रियं न

न्य दहिर्लसर्वधानृणां ॥ अस्मिन्नासदाकार्या ॥ कूपकयत्न
 गस्तथा ॥ ॐ यावच्चलार्क सूर्यश्च ॥ मदिनी सयसागना ॥ यावदाका
 गगिभच गावत्तुल्लिवाव ॥ अगर्गधयष्यधूयदीयने वद्यासि
 संकल्यसिद्धि वमु ॥ १ ॥ अथनेमलिसरयस्कयन ॥ धानस ॥ अथ
 यागयात्तखनराय ॥ ॐ व ॥ अमुकय रुट ॥ ॐ धनयाय ॥ ॐ ॐ स
 ॥ ॐ म्मासनाय नमः ॥ कायलन ॥ ॐ कूर्ममूर्ति यनमः ॥ यज्ञाया
 य ॥ ॐ कौटुदयाय ॥ ॐ कौ गिरिस ॥ ॐ कौ निखायेव ॥ ॐ कौ क

^{७८}
 वचायङ्॥ उँ कौ न गायवोँ उँ क४ अमुयङ्॥ धियादवन ईर
 न॥ वानयाय॥ द्यायाथी अगयागय॥ पूजायाय॥ उँ रुडायि२॥
 उँ रुडामूल्ये२॥ वरुंगनयूजायाय॥ उँ रौ हदयाय२॥ उँ रौ निम
 हाहा॥ उँ रौ निखायेवोँ॥ उँ रौ कवचायङ्॥ उँ रौ न गायवोँ॥ उँ रौ अ
 मुयङ्॥ वदनयूजा॥ उँ रुडा ना अ निवाङ्गा रुडा ना नि४ मूर
 गरुडा अ ध्वन४॥ रुडाड गयसकय४॥ वग सिद्ध उडम कास्वान
 न॥ स्त्रि न हान धि स्य गय अ ग या स॥ वा ष्॥ उँ रुड त्वि सर्वदारा
 षट्४।

दुःख सादिगा वरुंसदा॥ आयुर्द्ध कामदाद वि॥ शीयदा सर्वदाराव
 ॥ उँ याव वरुडि धु स्यै धु मदिनी सफसागना४॥ यावदा कागर्गम
 च गावत्तु स्त्रि नारव॥ अगुर्गि धादि॥ २॥ ॐ नि स्त्रि न वा ष्॥ ॥
 वायव्य को० सयाद सुँ याय उया॥ चाक्राय द्यायाथी॥ ३॥
 ॥ धनयाय॥ अर्ययागया त्रि खनदाय॥ उँ व४ अमुयङ्॥
 कायलन॥ उँ रौ स४ कूर्म सिनायु नम४॥ उँ कूर्म मूर्त्तये२॥ वरु
 गनयूजा॥ उँ कौ हद याय२॥ उँ कौ निमस०॥ उँ कौ निखायेवव
 यन४

ॐ कं कवचाय ॥ ॐ कौं नगायत्री ॥ ॐ कः अस्त्राय रुट ॥ ध्यायदव
 नं कुरुत ॥ चानयोय ॥ अगयानकायाय ॥ पूजायाय ॥ ॐ उयाये २
 ॥ ॐ उयामूर्त्ति २ ॥ षडङ्गनयूजा ॥ ॐ आहूययाय २ ॥ ॐ ऊं गिनस
 ०० ॥ ॐ ह्रीं गिखायेव ॥ ॐ ऊं कवचाय ॥ ॐ ऊं नगायत्री ॥ ॐ उः अस्त्राय
 रुट ॥ षडङ्गनयूजा ॥ ॐ यूः अगमनडनयूः अगधिवविषाविष
 स्यवृद्धेनावियधिग ॥ विहागाद ॥ धवयूनाविदक ठून्मदियव
 स्यसविदुः यनिष्टुनिः स्वाहा ॥ वगसिंधुऊऊमकास्वानन ॥ थिस्य
 वट् ४

नस्त्रिभुवन ॥ ॐ उयाय त्वं सर्वदा हृष्टा गिष्टुर्विष्णुयितामया ॥ नि
 त्यं उयाय वहाय विष्णुयिनः प्रीयदारुव ॥ ॐ उयाय वच्चन्द्रश्च सूर्य
 च भद्रिनीसयसागनाः ॥ यावदाकाशगंगमच गावर्त्तु उस्त्रिभु
 रुव ॥ अगुगल्यपृथ्वीयदीपनेवद्यादिगत्सर्वविधियनियुक्त
 नु ॥ ३ ॥ ॐ गिउयास्त्रिभुविधिः ॥ ॥ गगळीभनकाऽसत्रिका
 याविधिः ॥ यादस्त्रयनयाय ॥ कुरु रजिचागययागवाक्काय
 ॥ ॥ गधनयाग अर्घ्याणयालखनकायधानस ॥ ॐ वः अस्त्राय

॥४॥ ॐ निष्ठिन्नवाक् ॥४॥ ॥ द (ध) स पू र्ण या द क्क य न या य ॥
 वाक्का य द्दु या या धी ॥॥ ध न या य अ ध यो गु या ल ख न रु य ॥
 ॥३॥ ॐ व ४ अ मु य रु ट ॥ का य ल ग य ॥ ॐ दू स ४ क म सि
 ना य २ ॥ ॐ क र्म मूर्ति य २ ॥ यो जा या य ॥ ॐ का ह द या य २ ॥
 ॐ को नि त्र स ॥ ॐ क नि खा ये वो ॥ ॐ क क व वा य दू ॥ ॐ को न
 गाय वो ॥ ॐ क ४ अ मु य रु ट ॥ ॐ नि ष ठ ग न पू जा ॥ वी र ग य
 ॥ वा न या य ॥ अ न ग य ॥ यो जा या य ॥ ॐ पू र्ण ये २ ॥ ॐ पू र्ण मू

४८२

४८३

॥२॥ ॐ व ठ ग न पू जा या य ॥ ॐ यो ह द या य २ ॥ ॐ यो नि त्र स
 हा स ॥ ॐ यो नि खा ये वो ॥ ॐ य क व वा य दू ॥ ॐ यो न गाय वो ॥ ॐ य ४
 अ मु य रु ट ॥ व द न पू जा ॥ ॐ स म खा द या धि या सी द दि ण थ
 वृ च क्क सा मा म १ अ य ४ पु मा षी ४ ॥ मा १ अ ह ग व वी वी वि द य म
 व द वी र्गि नि ॥ च ग सि धु उ उ म क ख न न ॥ वा क्क ण य उ मा
 न क व मि थ न स्य अ ग धि सी स्ति न रु न ॥ ॐ पू र्ण त्व म रु वि
 अ सर्व सी दा रु ल क ॥८॥ सर्व सी पू र्ण भ वा ण कू य क क व र्ण स र्व

४८२

४८२





दा॥ॐ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च मदिनी सफसागवा॥ यावदाकाश
गमच गावत्तुष्टिगाराव॥ अगुगध्वपयध्वयदीयनेवशा
दिगत्सर्वविषयविष्णुमस्तु॥३॥ ॐ नित्यं ॐ स्तिनवाश्चविधि
४॥ ॥ यगायन॥ सरुनलूय॥ आत्रनिग॥ यगिष्ठा॥ नवा
नहाल॥ ॐ मनादूनि॥ ॥ यजमानन अर्घ्यवियक॥ ॐ स्व
ससाद्रदू सवर्ण पृथ्यथ नगयावहनकैत॥ वायुं॥ ॐ अश्व
वावाहकल्य॥ ॐ अश्वदि॥ यजमानस्ययथा ॥ ॐ अश्वक

लयाधिक्रययादस्तुयनसंगमर्थग्रीनन्दायेः०ममर्घगु
 हातास्वादा॥**शार्ग**॥ॐअर्घरियंदवयवलि.सर्वकामरुल
 पुथ।यादस्तुयनसिद्धार्थमर्घरियंप्रतिगृह्यमां॥कमस्व॥
 एवविधिना॥रुदाये॥उयाये॥विकाये॥यूष्मये॥कारि
 नंअर्घविय॥॥धनीलिकलणयूजायादाथायवन॥क
 लशमदियार्गददिकिआगयक॥वाक्कलाचार्यददिकिआविय॥
 वाचनकाय॥ॐस्वस्तिरवकावृणस्वस्ति॥न्यासयाय॥क

लग्नादिविसृज्जनि ॥ उँ उच्चर्यगमस्व ॥ सूर्यसाक्षिधाय ॥ वाचन
 लखडा अर्घ्ययागलखडा कलुगयालखडा न यजमान अ
 र्थिकविय ॥ उँ देवस्यता ॥ उँ अग्निना रुचि ॥ चन्दनसिद्ध
 न समुत्पादिन गचक ॥ अग्नीष्टोत्रविय ॥ वलिआदिनस्व
 स्तनादिसकय ॥ ॐ निष्क्यादिष्टाय न विधानं समाकम् ॥
 पादस्तु यन मया गसा पुनिष्ठा कद्रुयचवा वृणदय कमा
 न ॥ पादस्तु यन मया गसा र्यचवा वृण पुनिष्ठा कद्रुयक ममान ॥

अग्नौ अग्नौ अग्नौ अग्नौ अग्नौ ॥



मम

२ पादस्तु
यन मया
गसा र्यचवा
वृण पुनिष्ठा
कद्रुयक ममान



॥ वाचन अजमान ॥

१ कलुगयालखडा न
 यकाणसिद्धयुम
 स्वमिकवाययो
 नायन गायकाय
 मियतिग आसन
 सगय मद्यगसा
 इर्थगय ॥ कलुगयालिवमंश
 नरुयकं वाचकवाय अग्नौ ॥
 निधिर्कृत मद्यचकं वायस्वमिकस ॥

ॐ नमो वनोम्य ॥ ऊल
 यद्भ्या वसथविधिः ॥
 नागं ॐ क्रुनिर्धयु
 नागं कां पुमूलव
 यगकनगावकन
 रुन ॥ ॥ मूलनागका
 पुया वनोमकनास
 नत्वयवर्णे सरुमरु
 ॐ सरुमरु ॐ वा ऊर्ध्व
 क्रुक्रुक्रुपिदवीरुक्रुव
 ॐ विवकना नागपा
 यवमोदवीरुमासथव
 सागल सर्गुक्रुवामय
 लीविगा ऊर्ध्वकनवारु
 नेरुविग ॥ वनोम
 क्रुव नो नागपिद्व
 निरु ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मरुसंरुमरु ॐ ॥

वाङ्म

१००० मित्रासनं स
 प्रसमलिक ॥ ॐ मि
 न्युका ॥ ॥ वरु ॐ
 यादुगयापुलि नगक
 ॥ गवसिधुयायानस
 उमुलिगं मरुनसाम
 मान ॥ ॥ ऊर्ध्वकनाग
 मिधुक्रुनिरु ॐ ॥ ॥
 रवलरवा यद्यमालस
 सक्कुरा वाक्रुपिद्वि
 द्द्वर्स ॥ ॥ ॥ वासुकि
 नागल्वयु ॐ ॥ ॥ वा
 नरुनरुविग कपि
 यगपिउमरुमस ॥
 ॥ गक्रुकनागमा
 क्रुवर्णे ॐ ॥ ॥ ॥
 लसस्विककयालरवा
 नाना नदनि सा वेध

जाति. द. वि. लासगं ॥ ३ ॥
 कर्कोटकनाग. नीलव
 र्ण. रु. ७५३. ग. य. ल. व. य. ल.
 र. वा. स्व. गु. लि. ग. न. या. ग. स.
 धा. द. द. दु. वि. वि. ला. व. व. ५५
 दु. जा. ति. नि. नि. मु. ल. य. स. ग. ॥ ४ ॥
 य. द. न. ना. ग. का. क. य. ल. क. उ.
 नि. रु. ७५४. गा. य. रु. रु. टि. का.
 गु. लि. मा. ल. स. क. द. य. न.
 रु. न. न. कि. या. व. वा. क. ५५
 दु. जा. ति. य. वि. मि. स. ग. ॥ ५ ॥
 ॥ म. रु. ना. य. द. न. ना. ग. रि. वि. व. उ.
 नि. रु. ७५५. भा. ल. स. रु. का. फ.
 वि. श. ल. वा. क. य. वे. ग. जा. ति.
 वा. य. द. या. स. ग. ॥ ६ ॥ रि. स्व.
 या. ल. ना. ग. का. क. उ. नि.
 रु. ७५६. ल. व. य. ल. र. वा. ग. ल.
 या. ग. स. क. वि. य. जा. ति. उ.

वा. ५३

फ. न. स. ग. ॥ ७ ॥ क. लि. क.
 ना. ग. रु. का. क. उ. नि. रु. ७५७.
 व. रु. मा. या. ल. र. वा. मा. ल.
 स. अ. रु. का. स. गु. का. य. ग. ग. य.
 र. वा. क. रु. जा. ति. रु. ७५८.
 न. स. ग. ॥ ८ ॥ ध. ग. आ. य.
 रु. ७५९. का. ति. वि. य. स. वा. च. क.
 या. द. रु. क. य. न. म. या. ग. स.
 ध. न. ध. गु. लि. ना. ग. म. लु.
 ल. क. य. क. य. च. वा. न.
 रु. रा. लि. चा. का. य. क. उ. स.
 रु. ध. न. ध. का. रु. ध. का.
 व. अ. रु. का. य. स. य. क. उ. ग. ग.
 न. रु. रु. ल. य. स. क. य. क. उ. ग. ग.
 वा. य. द. या. स. क. य. क. उ. ग. ग.
 रु. ७६०. न. स. क. य. क. उ. ग. ग.
 व. न. रु. ना. ग. का. लु. य.
 रु. व. न. क. य. क. उ. ग. ग.

धर्मयचवानुत्तमयवि
 धि॥ इदं धर्मविधि कृतवन्
 वासं गच्छासाध्यावगच्छ
 नागकण्ठसर्पधर्मनन
 तं डाक्षयन् ॥ कनक
 कलिशीर्षालं यन्मना
 वभोकिंकीर्णगानियचि
 नत्तानि सर्वकाश्चि
 याङ्गयाग ॥ धर्मयचन
 तवान् यो धामनामालि
 कश्चर्गनत्तयुनिर्ध
 न्नामान् दधिमसनवन
 तर्धनं ॥ सर्वर्कनडा
 र्गचैव विद्ममिमुक्तिभ
 वच यद्यन्नागसिर्षदु
 र्ध्वा नावर्गिदुर्ध्वाभवच
 ॥ मनयचिसमायुर्कन
 वनत्तानि चैव किं ॥ राति

आकाशवत्सर्धनं ॥
 नागकुशनागयाडनि
 नद्ययकमाला ॥ दय
 कीदमदयकीदि ॥ ॥
 नागडोषधिर्धर्मवि
 धि ॥ बाल नृपकां
 ल यद्यकं गले छिद्य
 गुडशीलला वलासि
 क अगुनि कूलकी
 म कद्वन शिखण्डक
 रुन् धर्मचूनयाका
 वसकलतिनेर्धर्म
 नागवर्षि रोलिचार्म
 वनूणनागकोणुसर्ग
 धर्मनागडासधीगण
 अथनागअनूयान ॥
 वरुल उशीलकल

इदं शायुस्मान्नावा
ले मीळु अरुणा शो
युक्तामन धन कसि
मल्लिस्वान धन इद
सरागार्द्धधन नागव
सं सलिच्चारम मूलक
उसं गयीधन इना ॥
धनं अनाथान इना ॥

गणानागधूपदीयधि ॥
श्रावयु मुमुक्षुवि सध
कास उमाकन सस
सख सादयसो क ना
गधवनयारु कु सि
यावा निमिरु धनं म
धुया दावना गधूप ॥
दधमूलनाग कउया
पियणय नागकुण ॥

गोध पगायगा क
युजमानगुडिले क
धत्तनले धनं मूल
कायुयागे ॥ च्याय
गियलसधा क उं क
नियीयाउमरुनागया
गयुजमान ॥ कयाव
न ॥ च्याकनरुं कति
कुगुलिङ्गगुलि ध
नगयमान इना ॥

मुधियधन निमिध
शनयुयुविधन
डापि उलध निधक
न धनं याकन न
धयाकि न अमिध
झाका धिझाया वं दि
गयीदयक धयाय

यमं यदुवासनम् अ
निक्कुलुवायाध्वि आ
याव तवयागभिङ्ग
लकोटालङ्कया न
न ॥ **धर्मोऽनन्तः** ॥

धृङ्गलेद्रोऽनुनम् अ
यकोटीस किन्ताया
वध्वमं यदुवासन
यायाति यलं यमिवा
या ॥ यद्वयलं यमि
अनन्तनागाध्वगं ॥ १ ॥
अन्नाययलं यमि
वासुकिनागध्व ॥ २ ॥
यकिन्तायलं सग
कनागध्व ॥ ३ ॥ नेमुरे
यलं स ककोटिकना

गध्व ॥ ४ ॥ यमि सदि
यायलं यमि स यमना
गध्व ॥ ५ ॥ यायायाय
स मरुतायमनागध्व ॥
६ ॥ **इति नयलं स** ॥
ययालं नागध्व ॥ ७ ॥
अनयलं यमि स कलि
कनागध्वगं ॥ ८ ॥ ध्वगं
यावत्तुं कनिध्वयलं
यमि सयाय ॥ ९ ॥ यलं
मनिदध्व स मूलना
गकाऽनु ॥ ध्वगं यम्य ॥

अथ **यलि नयलं** यदि
धि ॥ १ ॥ र्कसगिन्ताया
सयाय कसुन कौद्र
म कर्कन ग्रासव ॥
नयलं नायं अगया

लाव धिणि कानाशासया
 काव लङ्गावाकान नानाम
 लु लथिष्ठि लवाय ॥ दध
 यस्मिन्निस्व लु नकायक
 धनयिकङ्ग लवाय ॥ ध
 कङ्गानका लु नकायक
 ॥ ध लु र्मिच्छाया कियस्
 थाय ॥ धूवनिस् ॥ ०० ॥
 नययान्क ल्वि ॥ अनकन
 कालिक ययान्क नय ॥ द
 धीय लय कियु लु नकाय
 क ॥ ध नयिथयकया कवा
 य ॥ ध यकया य का
 र्मिय क्वव नु लवाय ॥
 क्वव नु लवाय ॥ ध र्मि
 यीचवा नु लवाय ॥ ध नयि
 कान स ॥ ०० ॥ लु दि लवाय
 ल ॥ ध नयिनाग लु धी

य ॥ ध नयि कान लु धी
 ॥ ध नीका लान कयक
 ॥ ध म लु र्मिच्छाया क
 यन लवाय किय ॥ ध र्मि
 लका लु र्मिच्छाया क
 धनका म लु र्मिच्छाया
 मूला चार्थ्या रव वरसव
 लिम लु र्मिच्छाया क म लु
 लोम न रवाया वर ॥ व नि
 कान गाय व लि स ला
 र्वाग मा स न थाय चगा
 म धि ॥ व लि क्क ल र्वा
 माल द ॥ ध यङ्ग व लि
 याय रवाणि यक ॥ ००
 गय ॥ ध य वि नी स्व क
 न ॥ ०० ॥ यार्थ्या ग ॥
 या ग य वि नी ल र्मि

कायकं यार्गं च यार्गं
 अविनीतु रुधं वस्तुग
 यार्गं च यार्गं ॥ अविनी
 ईखा विखा यार्गं ॥ १५
 नं यार्गं स व र्गि व
 खा ली गं व का य कं य
 व य गा य क ॥ १६ य गा
 य ॥ इति आतामधं ग
 सिध स्वा नो ज्ञा स ना दि
 ॥ वक्रलि का ॥ १७ व न
 मूल क लो ग य ॥ १८ लि
 व ॥ कि क लो ग या रु द
 या य ॥ क्रम क न सिध
 मूक स मु ल ध वि लि
 व नो माल श्री लक्ष्मी ये
 का य क लो ॥ १९ ना ग धी ॥
 वी वि नी ध न या र्गं य

वा कं न य च न व नि ग
 ॥ य नि व रु क यार्गं गं ॥
 य ॥ य च न मा ल क र्गि व
 लि वा य ॥ २० व क र्ग स न
 व न य र्ग स य च या रु
 ग य व क यार्ग य कि च व
 दू र गं च न सी धं आताम
 स्वा न गं ॥ २१ ग वा य य
 नि या टि वि वि रु न ॥ ॥

॥ २२ ॥ न यार्गं व स य वि वि धि
 गं ॥ २३ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 न यार्गं ॥ २४ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ २५ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ २६ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ २७ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ २८ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ २९ ॥ न यार्गं स य वि वि धि
 स यार्गं ॥ ३० ॥ न यार्गं स य वि वि धि

[illegible]

विहङ्गल ॥ १०८ ॥ कुन्दका
 १०८ ॥ द्याय आनदा या
 न् विचाक्र कुललि
 म धनरुल ॥ १०९ ॥
 य रुल दा ॥ ११० ॥
 ग वा अरुग ॥ १११ ॥
 वा क रं २ वयनव
 १०८ ॥ ११२ ॥
 न् अरुवा नयाग ८
 य वनरुआ १३ ॥
 य लआ ३ अरुवा कि
 रु सनि वधाय १४
 य वरुग काय १५
 क मायी का का १६
 नयाग १७ ॥
 सिङ्गलवा नाय १८

क्रीडाभवात्तावच्छ ॥ ग
 वलिनवच्छ ॥ पद्मिनिः
 व ॥ गिडात्तासनाव
 याग ॥ क्योरुष्टिआ
 ॥ दवयुगिष्ठादगासा
 स्तानडासधीआन ॥
 मुफिका, कषास्य, क
 सं, यल्लव, यच्चादिः
 चिचूर्ण, विरुति, गीः
 गभ्रुल, लैरवदयक
 रुका, गीगामुफिका
 दाका रुगिनी, याग
 रुगिनी, गुष्टिआनका
 ००००, अङ्गनसालाः
 लैर्भुगुलि, डाक्षोर्भुः
 गुलि, लैरवाल, लैरुल

डाना, मधुपर्कस्थालाः
 गुयवडासग, दल्लुक
 १०, कालसाङ्कडलिः
 सिधुर्गिगला, यागाव
 नाय, धून, ऊजमकाः
 लाखामा, लाखाचाङ्गा
 नरासा, लैसि, उगग
 ल, मनव, धियविधि
 १०, रुलल, वरुलल
 गुगुगु, नूयकाङ्गन
 यद्मकाङ्गन, समुख
 चिर्यगु, गुगुनकाट
 १०६ अगुन, चनन
 गुलवच्छ १०६ वाध
 निव १०६ सानयासा
 क, कर्ष, दिन, गु, ल

धनु सनावयाग ॥ ५८ ॥
 उ ॥ अर्धो ॥ उगा ॥ निष्ठा
 व ॥ शागधन ॥ सरुमु
 धन ॥ शागभाष्यधी ॥
 धन ॥ दयकविधि ॥

उल्लुगिष्ठाङ्क ॥
 आचार्यो ॥ अङ्क ॥ आनि
 यजमानयनि ॥ सकल
 संहितसिद्धि ॥ ज्ञान
 उयवासयाय ॥

अथ सन्निष्ठाङ्क ॥
 यायशाग ॥ ५८ ॥
 लसं ॥ निष्ठाङ्क ॥
 नक ॥ शाग ॥ सना
 तिष्ठ ॥ धन ॥ धनकाव

पुवा ॥ चतुःसमचन्द
 न ॥ श्रीरव ॥ क ॥ स
 कीक ॥ म ॥ क ॥ र्युन ॥ ॥
 न ॥ ज ॥ ध ॥ नि ॥ ज ॥ क ॥ द ॥ न
 वा ॥ द ॥ न ॥ क ॥ सि ॥ सा ॥ र ॥ व
 न ॥ शा ॥ य ॥ वा ॥ रु ॥ ले ॥ सा
 न ॥ १०८ ॥ ॥ र ॥ व ॥ वि ॥ का ॥ उ
 मा ॥ ले ॥ का ॥

ॐ ॥ इ ॥ नि ॥ द ॥ या ॥ ग ॥ ध ॥ व
 ध ॥ व ॥ स ॥ व ॥ र्ध ॥ न ॥ न ॥ ना ॥ ग
 इ ॥ ग ॥ द ॥ य ॥ क ॥ ॥ इ ॥ का ॥ द ॥
 गा ॥ य ॥ इ ॥ का ॥ द ॥ ॥ उ ॥ वा ॥ इ ॥
 द ॥ गा ॥ य ॥ रु ॥ इ ॥ रु ॥ रु ॥
 इ ॥ ॥ इ ॥ ॥ १ ॥ ॥ गा ॥ य ॥ गा ॥ य
 रु ॥ ॥ इ ॥ ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥
 गा ॥ य ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥
 गा ॥ य ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥ रु ॥

कर्मध्यायः ॥

मीमंसायां संग्रहः ॥

पा ३२ कश्चिन्मन्त्रा ३२ सोमि
या १ सीत-कृ २ जाकि-कृ २ ते के
कृ १ ला म-सा ३ दु-सा धी
कृ १ अदिम-चा कु-कति
सा ख-ता य पो ता य-धुं द ता
ज्जंका-मा धुं-वा धुं-धे ल
रु न-वा पो र्वां-स्वां वा-म
मा ष-क य ग-म्या-दका प
का को ल-भो यु ला म-सि
यु ला म-कं १ धुं वा-कं २ आ
स विजा कि-कुलिका-से दुई
ता-वैमि-वं ग-न ह-पो हः प
ह-पंच प-द्वे म-तु-नी-जमहि
सकि-मधि-गा-यन्त्र ग २०
यज-श्री वाधि-उरु का दय सि
को य व-मि विपम-सि सा क
ले-म द म-ग-न-वैमि-गु

धामिन्मन्त्रा ३२ पुन पा १
अमभिन्नामा १ शेष ज १
ज ८ ज प-पा ७ ग-निसला ह
स्वहमा स्वहचा-कि ३ तु कि
रथया त कं ८ वां-मि मन्त्रो
ला ज द-सि मया स्वकुं ला
गु १ सि मया-वे कुं ला गु १
यु न धा १ १ वृ हिसला १
मो मि अ ह-ला १ कं स या
वा मा १ सि मया वा मा २
ला म या गु का १ स गु ला या
नयो सा क गु १ गु-ची १ गु रु
य चा १ स्नान श्रे वा धिः सा
नो सा वि-गु या स र्ध वि
स्व २ व ह या-व-वृ वि १
ध ह या ला यो-तु या गु रु म
ग ल-मि दू-म नि-मा नि क्य-
पु ष्प ला ज-ह-ग-मो दि-गा व
न-स-मि ज-वे ल-क मि-ला
र-स्वां वा-तु यु ला म-दका
य का-क य म-न-वै-मा र